SHAKUNTALAM INSTITUTE OF TEACHERS EDUCATION

KIRHINDIH, KUMHAU STATION ROAD, SHIVSAGAR

COURSE NAME – B.Ed.

SESSION – 2020 - 22

SUBJECT - Learning and Teaching (C-3)

TOPIC NAME – ~~Unit~~-4 (Relating Classroom Practices with Curriculum, Pedagogy and teaching resources)

DATE - 09/07/2021

Unit-4

Topic - III

कक्षायी गतिविधियों को पाठ्यचर्या, शिक्षणशास्त्र एवं शिक्षण संसाधनों के साथ जोड़ना

पाठ्यचर्या :- (Curriculum)

(शाब्दिक अर्थ)

Curriculum शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा क्यूररे (Currere) शब्द से हुई, जिसका अर्थ है - 'दौड़ का मैदान' (Race Course)। यह एक दौड़ का मैदान है, जिसपर व्यक्ति ध्येय को प्राप्त करने के लिए दौड़ता है। यहाँ पर दो शब्द - दौड़ तथा मैदान प्रयुक्त किये गये हैं। 'मैदान' का अर्थ पाठ्यक्रम से है और दौड़ का अर्थ छात्रों द्वारा अनुभव एवं उनकी क्रियाओं से है।

प्राचीन धारणा के अनुसार पाठ्यक्रम का अर्थ :-

प्राचीन धारणा के अनुसार पाठ्यक्रम का अर्थ - पाठ्यवस्तु की एक सूची के रूप में लगाया जाता था। पाठ्य-वस्तु को प्रायः अध्ययन विषय के नाम से पुकारा जाता था। वस्तुतः पाठ्य-वस्तु को विद्यालय-विषयों तक सीमित कर दिया जाता था एवं बालक द्वारा Classroom से बाहर ग्रहण किये जाने वाले अनुभवों को पाठ्यक्रम का अंग नहीं माना जाता था।

आधुनिक काल मे पाठ्यचर्या का अर्थ :-

सामान्य बोल चाल की भाषा में, विद्यालयों में विद्यार्थियों को शिक्षित करने हेतु जो कुछ किया जाता है उसे पाठ्यचर्या के नाम से जाना जाता है। शिक्षा के उद्देश्य सदैव बदलते रहते हैं इसलिए पाठ्यक्रम का अर्थ भी बदलता रहा है। अतीत में पाठ्यक्रम का अर्थ संकुचित था कुछ विषयों में शिक्षा के प्रारूप को ही पाठ्यक्रम कहते थे परंतु आज के संदर्भ में अधिक व्यापक

अर्थ है। बालक को भावी जीवन के लिए तैयार कर सके ऐसा पाठ्यक्रम होना चाहिये।
पाठ्यक्रम विकास सदैव भविष्य के लिए किया जाता है। 2.

MAY 2019

M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S	S
		1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31									

MAY
THURSDAY 23
WK 21 • 143-222

विभिन्न शिक्षाशास्त्रियों ने पाठ्यक्रम को कुछ निश्चित शब्दों में परिभाषित करने का प्रयास किया है। जो निम्नलिखित है —

कनिंघम अनुसार :—

"कलाकार (शिक्षक) के हाथ में यह (पाठ्यक्रम) एक साधन है जिससे वह पदार्थ (शिक्षार्थी) को अपने आदर्श उद्देश्य के अनुसार अपने स्टूडियो (स्कूल) में ढाल सके।"

फ्रोबेल के अनुसार :—
"पाठ्यक्रम को मानव जाति के सम्पूर्ण ज्ञान तथा अनुभवों का सार समझना चाहिए।"

मुनरो के अनुसार :— "पाठ्यक्रम में वे सब क्रियायें सम्मिलित है जिनका हम शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु विद्यालय में उपयोग करते है।"

माध्यमिक शिक्षा आयोग के अनुसार :—

"पाठ्यक्रम का अर्थ रूढ़ीवादी ढंग से पढ़ाये जाने वाले बौद्धिक विषयों से नहीं है परन्तु उसके अन्दर वे सभी क्रिया-कलाप आ जाते हैं जो बालकों को कक्षा के बाहर तथा भीतर प्राप्त होते हैं।"

JUNE 2019

M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S	S
					1	2	3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30							

24 MAY FRIDAY

144-221 • WK 21

शिक्षा शास्त्र (Pedagogy)

शिक्षण कार्य की प्रक्रिया का विधिवत अध्ययन शिक्षाशास्त्र या शिक्षण शास्त्र कहलाता है। शिक्षण-शास्त्र में अध्यापन की शैली या नीतियों का अध्ययन किया जाता है। शिक्षण शास्त्र द्वारा, कक्षाओं में गतिविधियों और शिक्षा का प्रबंधन कैसे करना है, प्रत्येक छात्र में सीखने की क्षमता को अनुकूलित करने वाले पाठ्यक्रमों को सुविधाजनक बनाने के लिए शिक्षकों को सशक्त बनाता है। शिक्षक अध्यापन कार्य करता है तो उस बात का ध्यान रखता है कि अधिगमकर्ता को अधिक से अधिक रचनात्मक सौन्दर्यबोध तथा आलोचनात्मक समझ बढ़ाये और बच्चों को वर्तमान तथा अतीत के बीच सम्बन्ध बनाने एवं समाज में होने वाले परिवर्तन को समझने में सक्षम करे।

JULY

AUGUST

शिक्षण संसाधन (Teaching Resources)

शिक्षणशास्त्र में शिक्षण संसाधनों का प्रयोग शिक्षण को प्रभावशाली बनाने के लिए किया जाता है। शिक्षण-अधिगम संसाधन शिक्षक द्वारा शिक्षण अधिगम गतिविधियों के प्रारम्भ होने से पहले निर्धारित किये गये अधिगम उद्देश्यों को प्राप्त करने को सुगम बनाते हैं। शिक्षण अधिगम संसाधन में विभिन्न प्रकार की शिक्षण सामग्री, यंत्र तथा उपकरण शामिल हैं। इनमें से कुछ संसाधन डिजिटल प्रकृति के हैं; (जैसे - रेडियो, टेलीविजन, कम्प्यूटर, इन्टरनेट, मोबाइल आदि) जब अन्य गैर डिजिटल प्रकृति के (जैसे - पाठ्यपुस्तक, चॉकबोर्ड, चार्ट, नक्शा ग्लोब, प्रतिमान आदि)

इस प्रकार कक्षायी गतिविधियों को पाठ्यचर्या शिक्षणशास्त्र एवं शिक्षण संसाधनों को एक साथ जोड़कर इसका सुसंचालन एवं प्रशासन करने में शिक्षक और विद्यालय प्रशासन, शिक्षण विधियाँ एवं शिक्षण संसाधन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है; जिससे की विद्यालय का प्रत्येक विद्यार्थी अपनी रूची व क्षमता के अनुरूप अधिगम प्राप्त कर सके।

कक्षा में पाठ्यक्रम का सुसंचालन एवं प्रशासन करने के लिए विद्यालय प्रशासक के मस्तिष्क में अनेक प्रकार के प्रश्न उठना स्वाभाविक है जैसे —

1. पाठ्यक्रम जिसका संचालन या प्रशासन किया जाना है उपयुक्त है? क्या यह व्यक्ति समाज व राष्ट्रीय अपेक्षाओं को पूरा करता है?

2. पाठ्यक्रम के उद्देश्यों के अनुरूप कौन-कौन से शिक्षण-अनुभव किये जायें?

3. शिक्षण अनुभव विद्यार्थियों को प्रदान करने के लिए कौन-कौन सी शिक्षण विधियाँ प्रयोग में लायी जायें?

4. क्या पाठ्य अनुभवों को प्रदान करने के लिए उसके विद्यालय में पर्याप्त मानवीय व भौतिक संसाधन उपलब्ध हैं? जैसे - उपयुक्त स्टॉफ, पुस्तकालय, प्रयोगशालाएँ पाठ्य सहायक सामग्री आदि।

MAY
MONDAY
WK 22 • 147-218
27

MAY 2019

M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S	S
		1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31									

अतः एक शिक्षक एवं विद्यालय प्रशासक को पाठ्यक्रम संचालन के पूर्व इन तथ्यों पर विचार करके आवश्यक तैयारी के बाद पाठ्यक्रम का संचालन करना चाहिए कि विद्यालय के प्रत्येक विद्यार्थी को उसकी रुचि व क्षमता के अनुरूप उपयुक्त विषय का चुनाव कर सकने की व्यवस्था हो, जिसमें प्रत्येक विद्यार्थी को प्रभावी अधिगम के पर्याप्त अवसर प्राप्त हो, छात्रों को विभिन्न विषयों : विज्ञान, सामाजिक ज्ञान व मानविकी में ज्ञानार्जन के अवसर प्राप्त हो, ताकि वे अपने ज्ञान के क्षेत्र का विस्तार कर सकें।

6